Airo National Research Journal
Volume XV ISSN: 2321-3914
SEPTEMBER 2018

UGC Approval Number 63014

विभिन्न संस्कृत साहित्य आचार्य एवं राधावल्लभ त्रिपाठी का सूक्ष्म वृत्तांत

विकास त्रिपाठी

जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर म.प्र.

वामनभट्ट बाण – आपके पिता का नाम कोमटियाज्बा था।[1]

आपका का समय 1400ई. माना जाता है।[2]

राजा वेमभूपाल के आप सभाकवि थे। राजा बड़ा ही दयावान समाजसेवी प्रजाभक्त राजा था वह अपनी प्रजा को पुत्रवत पालन करता था।

षड्भाषा वल्लभ कविसार्वभौम तथा अभिनव भट्ट बाण ये तीन उपाधियाँ मिलती है।

पण्डितराज जगन्नाथ – इनके पिता का नाम पेरूभट्ट तथा माता का नाम लक्ष्मीदेवी था। [3]

पण्डितराज जगन्नाथ शाहजहां के दरबारी कवि थे। आपका जन्म 17 बी.ई. में माना जाता है ये तैलंग ब्राह्मण थे। पण्डितराज जगन्नाथ जी अपने समय के कवियों में श्रेष्ठतम् कवि थे।[4]

---

[1] संस्कृत साहित्य इतिहास आचार्य बलदेव उपाध्याय पृष्ठ 409
[2] कादम्बरी महाश्वेता वृतान्त पृ 11
[3] काव्य प्रकाश विश्वेश्वर पाण्डेय पृ 93

अम्बिकादत्त व्यास – व्यास जी एक अलौकिक प्रतिभाशील विशिष्ट शैली धारक संस्कृत के विद्वान कवि थे। अम्बिकादत्त व्यास जी का जन्म जयपुर में हुआ आपका जन्म समय लगभग 1855 से 1900ई. तक माना जाता है। [5]

विश्वेश्वर पाण्डेय– पाण्डेय जी के पिता का नाम लक्ष्मीधर था। इनका जन्म अल्मोड़ा जिले के पाटिया गांव में हुआ था आप भारद्वाज गोत्री ब्राह्मण है तथा आपका जन्म 18बी.सी. के प्रारंभ का माना जाता है। [6]

केशवचन्द्रदास – केशवचन्द्रदास का जन्म ई. जिला कामरूप असम में हुआ था आपका एक सुंदर सा उपन्यास का भी निर्माण भी किया था। जिसमें अशान्ति क्यों होती है? आप एक शान्त प्रिय कवि थे। इनका एकांत प्रिय माना जाता था। इन्होंने शान्ति के मार्ग का भी वर्णन किया है।[7]

केशवचन्द्रदास की दो कथायें है नीलचन्दन और चरित्रम्

आपने इसमें भ्रष्टाचार और समाज को एक सुन्दर सा संदेश दिया जो चरित्रहीनता को कथ्य बनाती है।[8]

विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र – विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र जी का जन्म 18 मार्च 1956ई. को ग्राम कहारा, हमीरपुर उ.प्र. में हुआ था वैसे तो आपके कई काव्य है लेकिन

---

[4] संस्कृत सुकवि समीक्षा पृ.609
[5] संस्कृत साहित्य का इतिहास आचार्य बलदेव उपाध्याय पृ. 411
[6] संस्कृत साहित्य का इतिहास आचार्य बलदेव उपाध्याय पृ. 410
[7] दृक पत्रिका अंक 20 पृ. 133
[8] दृक पत्रिका अंक 20 पृ. 92

सबसे चीर प्रसिद्ध काव्य आपका है हिरण्य प०जरः इसमें आपने मानव जीवन के ऊपर एक कटाक्ष किया जो उत्तरबोध रहितता और सामाजिक वैमनस्यता की समस्याओं को बया करती है।[9]

नारायण दश– नारायणदश का जन्म 25जून 1972ई. में उड़ीसा के गंजाम जिले में हुआ। आपने अपने काव्य की भाषा सरल एवं सुसज्जित रखी है, जिससे सहृदय को द्वदय को समझने में आसानी हो। आपके कई ग्रन्थो में से दो ग्रन्थ बड़े ही प्रसिद्ध माने जाते है।

1. परिचय 2. प्रतिरूपम्

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी– आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी जी का जन्म 15 फरवरी 1949ई. में राजगढ़ जिले में हुआ। आपने कई काव्यों की रचना की जैसे–

1. गणेश पूजनम् 2. प्रेक्षण 3. सतकम् 4. विक्रमचरितम् 5. अभिनवशुकसारिका

कलानाथ शास्त्री– कलानाथशास्त्री का जन्म 15 जुलाई 1936ई. में जयपुर, राजस्थान में हुआ। आपका जीवनकाल बड़ा ही रोचक रहा । आपको कईयों बार कई उपलब्धियों से भी सम्मानित किया गया।

रचना – 1. जीवनस्य पृष्ठद्वयम् 2. निर्णयन्तु भवन्त एव

[9] दृक पत्रिका अंक 20 पृ. 89

1. जीवनस्य पृष्ठद्वयम् – यह एक सुन्दर सा उपन्यास है, जिसमें आपने राकेश और उसकी शिष्या कल्पना के प्रेम प्रसङ्ग का सुंदर चरित्र किया है।[10]

2. निर्णयन्तु भवन्त एव – इसकी कहानी घटना प्रधान है, जो वस्तुविधान से प्रभावित समाज को जागृत करती है।[11]

अभिराज राजेन्द्र मिश्र– अभिराजराजेन्द्र मिश्र का जन्म सन् 1943ई. में हुआ। आप सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के वाइस चान्सलर रहे।

रचनाकृति 1. ताम्बूलकरङ्कवाहिनी 2. प्रणयी प्रीतिकूटस्य

बाणभट्ट – बाणभट्ट के पिता का नाम चित्रभानु था। बचपन में ही उनके सर से पिता का हाथ उठ गया था। तब से ही उन्होंने घर त्याग दिया था। और कविता करने लगे कालान्तर में वह एक श्रेष्ठ कवि के रूप में ख्याति प्राप्त की तथा (शादी) दाम्पत्य जीवन भी व्यतीत किया। उनका एक पुत्र भी था जिसका नाम भूषण भट्ट था और वह भी योग्य था जिसने कादम्बरी के उत्तर भाग की रचना की है।[12]

बाणभट्ट का समय 7बी.ई. माना जाता रहा। उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना के बारे में बताते है, हर्षचरितम् एवं कादम्बरी उनकी श्रेष्ठतमा काव्य हैं

हर्षचरित– बाणस्य हर्षचरिते निश्चितामुदीक्ष्य।

[10] दृक पत्रिका अंक 20 पृ.132
[11] दृक पत्रिका अंक 20 पृ.92
[12] संस्कृत साहित्य का इतिहास बलदेव उपाध्याय पृ. 389

शक्तिनकेऽत्र कवितास्त्रभदं त्यजन्ति।।[13]

हर्षचरित की शैली ओजपूर्ण, आत्मग्राही रोचक के रूप में है।[14] हर्षचरित में आठ उच्छ्वास है।[15] यह वीर रस प्रधान है। बाणभट्ट ने अपने जीवन और हर्षचरित के जीवन को एक सुदृढ़ रूप से पराकाष्ठा के साथ पूरा किया। एक ऐसी कहानी का निर्माण किया जो अतुल्य है। हर्षचरित्र को बाणभट्ट ने 3 भागों में बांटा प्रथम भाग में प्रथम उच्छवास से तृतीय उच्छवास तक स्वयं की जीवनी का चित्रण किया। द्वितीय क्रम में चतुर्थ उच्छ्वास में प्रभाकर वर्धन तथा यशोमठी के चरित्र का गान किया एवं तृतीय क्रम में पŒचम उच्छ्वास से अष्टम उच्छ्वास तक राजकुमार हर्ष और राज्यश्री का वर्णन किया।

कादम्बरी – कादम्बरी संस्कृत साहित्य की अनूठी कृति है।[16]

यह संस्कृत साहित्य अद्भुत काव्य माना जाता है। विभिन्न आचार्यो के मत से कादम्बरी बागभट्ट की सर्वोत्कृष्ट रचना है। यह कथा काल्पनिक है। इससे कन्या लाभ प्राप्त होता है।[17]

इसके दो खण्डों में विभाजित किया है।

[13] संस्कृत साहित्य की रूपरेखा पृ.255
[14] संस्कृत कवि दर्शन पृ. 495
[15] संस्कृत कवि दर्शन पृ. 495
[16] संस्कृत कवि दर्शन भोला शंकन व्यास पृ. 495
[17] संस्कृत कवि दर्शन भोला शंकन व्यास पृ. 495

1. पूर्वार्द्ध 2. उत्तरार्द्ध

कादम्बरी का प्रधान रस श्रृंगार था।[18]

इसमें चन्द्रपीड, पुण्डरीक विदिशा के राजा शूद्रक चाण्डाल कन्या वैशम्पायन इत्यादित पात्र हैं यह एक रोचक कहानी है। यथार्थ कादम्बरी का जटिल कथाविन्यास सर्वश्रेष्ठ माना गया।[19] [20]बाणभट्ट साब का कोई सानी नहीं था वह अपने समय के श्रेष्ठ कवियों में पहले स्थान पर थे।

[18] संस्कृत साहित्य का रूपरेखा 259
[19] आचार्य बलदेव 400
[20] आचार्य बलदेव 398